

पाठ 26 अध्याय 21

आज हम व्यवस्थाविवरण अध्याय 21 की शुरुआत कर रहे हैं, और यह अध्याय एक बहुत ही अजीब अनुष्ठान से शुरू होता है जिसे यहूदी रब्बियों और प्राचीन इब्रानी संतों को समझाने में बहुत कठिनाई हुई है। ईसाई विद्वान कोशिश भी नहीं करते। हम उस अनुष्ठान का पता लगाएँगे और देखेंगे कि हम इसका क्या अर्थ निकाल सकते हैं।

यह अध्याय वास्तव में दो भागों में विभाजित है: पद 1-9 जिसमें एक अज्ञात हमलावर की समस्या पर चर्चा की गई है जिसने किसी की हत्या कर दी, और फिर शेष भाग जिसमें 4-अध्याय वाला खंड शुरू होता है जो इस्राएल के लिए कई विविध व्यवस्थाओं से संबंधित है।

अध्याय 21 के पहले भाग को समझने की कुँजी यह है कि यह रक्तपात के विषय के इर्द-गिर्द घूमता है।

आइए हम व्यवस्थाविवरण अध्याय 21 को साथ मिलकर पढ़ें। हम केवल पहला भाग ही पढ़ेंगे।

व्यवस्थाविवरण अध्याय 21: 1-9 पढ़ें

विद्वानों और शिक्षकों का इस अध्याय के प्रति सामान्य दृष्टिकोण एक बछिया (एक मादा गाय) की गर्दन के इस रहस्यमयी टूटने में शामिल प्रत्येक अनुष्ठान तत्व का अर्थ निकालने की कोशिश करना है, जो स्थानीय समुदाय में एक अनसुलझी हत्या की समस्या के जवाब में किया जाता है। निश्चित रूप से हम भी ऐसा ही करेंगे, हालाँकि आज हम जिस बड़े विषय से शुरुआत करेंगे, वह उस अनसुलझे हत्या के भयानक गंभीर नकारात्मक आध्यात्मिक प्रभाव से संबंधित है, जो उस स्थान के सबसे नज़दीकी शहर पर पड़ता है जहाँ पीड़ित का शव मिला था, और अधिक सही ढंग से यह पूरे इस्राएल को कैसे प्रभावित करता है।

समस्या यह है कि इस अनसुलझे हत्या के परिणामस्वरूप रक्तपात का पाप (या बेहतर ढंग से कहें तो रक्तपात की स्थिति या स्थिति) इस्राएल पर डाल दिया गया है।

आइए थोरी देर के लिए रक्त और रक्तदोष के बारे में बात करें, क्योंकि विश्वासियों (विशेष रूप से पश्चिमी सांस्कृतिक ईसाई) को इस बारे में बहुत कम जानकारी है कि रक्तदोष क्या है और क्यों परमेश्वर की न्याय प्रणाली और न्यायशास्त्र में रक्त इतना महत्वपूर्ण है। संक्षेप में रक्तदोष, अशुद्धता और पाप की एक गंभीर स्थिति है जो उस व्यक्ति पर आती है जो परमेश्वर के रक्त से संबंधित नियमों का उल्लंघन करता है। मैं एक व्यापक कथन प्रस्तुत करके शुरू करना चाहूँगा, जिसके बारे में मुझे उम्मीद है कि आज के अंत तक मैं आपको इस संवेदनशील विषय पर बेहतर दृष्टिकोण देने के लिए पर्याप्त गहराई से समझा दूँगा: रक्त, परमेश्वर की न्याय प्रणाली के केंद्र में है जिस तरह से एक धुरी एक झूले के केंद्र में होती है। जब यह पूरी तरह से एक दिशा में घूमता है तो एक प्रभाव होता है, और जब यह दूसरी ओर वापस घूमता है तो इसका विपरीत प्रभाव

होता है। स्पेक्ट्रम के एक छोर पर रक्त का दुरुपयोग परमेश्वर द्वारा मनुष्य से प्रतिशोध लेने का कारण है, लेकिन दूसरी ओर रक्त का उचित उपयोग रक्त-अपराध का उपाय है। सावधानी से साफ-सुथरे समाज में रहने वाले अमेरिकियों के रूप में, हम पवित्रशास्त्र में रक्त की आवश्यकता, भूमिका और केंद्रीयता के बारे में लगभग कुछ भी नहीं जानते हैं क्योंकि यह हमारे कानों को अपमानित करता है, हमें अपनी आँखें फेर लेने का कारण बनता है और इसके बारे में बात करने से हमारा पेट खराब हो जाता है। हमारे उद्धारकर्ता के रक्त के बारे में कुछ ईसाई गीत गाने से ज्यादा जो हमें बर्फ की तरह सफेद बनाता है।

फिर भी, जैसा कि हमने तोरह का अध्ययन किया है, हम पाते हैं कि बाइबल में रक्त के प्रति आकर्षण है और साथ ही साथ रक्त के मूल्य और आवश्यकता को सर्वोच्च सम्मान में रखा गया है। ईसाई होने के नाते हमारे पास ऐसे कई गीत हैं जो "यीशु के बहुमूल्य रक्त" का जश्न मनाते हैं और शोक मनाते हैं। गैर-विश्वासी, विशेष रूप से नास्तिक, इस बात की ओर इशारा करना पसंद करते हैं कि वे रक्तपात और रक्तपात के इस भयानक और बर्बर धागे को क्या मानते हैं जो उत्पत्ति से लेकर प्रकाशन तक चलता है। ईसाई लोग बड़े पैमाने पर रक्तपात के कारण पुराने नियम से बचते हैं और साथ ही किसी तरह नए नियम और विशेष रूप से प्रकाशन की पुस्तक में रक्त की भूमिका को मानसिक रूप से कम आँकते हैं।

जब कोई बाइबल का ध्यानपूर्वक अध्ययन करता है तो हम पाते हैं कि वाचा बनाने के साथ-साथ अपराधों के लिए प्रायश्चित्त करने के लिए रक्त, मुख्य आवश्यक तत्व है। इसे खाना मना है और निर्दोष व्यक्ति का रक्त (जीवन) लेना भी मना है। एक ओर रक्त, अशुद्धता का कारण बनता है, और दूसरी ओर यह पृथ्वी पर अशुद्धता का सर्वोच्च शोधक है। प्राचीन इब्रानियों और अधिकांश अन्य प्राचीन संस्कृतियों के लिए भी, रक्त, पूजा में केंद्रीय और अपरिहार्य था।

बाइबल हमें रक्त के विषय पर लाने में कोई समय बर्बाद नहीं करती है क्योंकि उत्पत्ति के तीसरे अध्याय में परमेश्वर के अपने हाथों ने इतिहास में पहली दर्ज की गई मृत्यु को अंजाम दिया जब उन्होंने एक जानवर को मार डाला और उसकी खाल का उपयोग आदम और हव्वा के नग्नता को ढकने के लिए किया। जब पत्ते या ऊन जैसी अन्य संभावनाएँ मौजूद थीं, तो परमेश्वर ने कपड़े प्रदान करने के लिए एक निर्दोष जानवर को क्यों मारा? क्योंकि इस बिंदु से आगे यह मामला बनाया जाएगा कि केवल रक्त ही पिता के विरुद्ध पापों का प्रायश्चित्त कर सकता है। इसलिए परमेश्वर के पास एक विकल्प था: वह अपराधियों (आदम और हव्वा) का जीवन ले सकता था या वह एक विकल्प प्रदान कर सकता था और उस विकल्प के जीवन को अपराधियों के पापों के लिए क्षतिपूर्ति और प्रायश्चित्त दोनों के रूप में स्वीकार कर सकता था।

रक्त के बारे में एक और ईश्वर सिद्धांत भी शास्त्रों में आरंभ में प्रस्तुत किया गया है: जैविक जीवन जो रक्त से भरा है वह जैविक जीवन से भिन्न है जो रक्त के बिना मौजूद है अर्थात्, पशु जीवन पूरी तरह से पौधे के जीवन से अलग है। पौधे का जीवन, हालाँकि मूल्यवान है, लेकिन परमेश्वर की नजर में पशु जीवन से कम मूल्यवान है। पौधे का जीवन, परमेश्वर को धन्यवाद के लिए और प्रथम फल की भेंट के रूप में चढ़ाया जा

सकता है, लेकिन पौधे का जीवन, पाप के लिए प्रायश्चित नहीं कर सकता। और यह इस बात से प्रदर्शित होता है कि जब आदम और हव्वा को शर्म महसूस हुई, तो उन्होंने खुद को ढकने के लिए पौधे के जीवन (अंजीर के पत्तों) का इस्तेमाल किया। एक भौतिक तर्कसंगत दृष्टिकोण से, उन अंजीर के पत्तों ने कपड़े के रूप में अपनी भूमिका में पूरी तरह से काम किया। तो परमेश्वर ने उन अंजीर के पत्तों को जानवरों की खाल से क्यों बदल दिया? परमेश्वर को वे अंजीर के पत्ते के कपड़े अस्वीकार्य नहीं लगे क्योंकि वे किसी तरह से उनकी फैशन संवेदनशीलता को ठेस पहुँचाते थे और न ही उन्हें लगता था कि जानवरों की खाल अधिक टिकाऊ होती है, बल्कि यह था कि आदम और हव्वा को जो शर्म महसूस हुई वह उनके अपराध का परिणाम था, और उनका अपराध परमेश्वर के खिलाफ अपराध का परिणाम था। और परमेश्वर के खिलाफ अपराध का भुगतान केवल खून से किया जा सकता है, कभी भी पौधे के जीवन से नहीं। इसलिए परमेश्वर ने आदम और हव्वा को उनके अपराध, का परिणाम पहनाया; उनकी शारीरिक नग्नता के ऊपर उस निर्दोष जानवर का भौतिक अवशेष था जिसका खून उनके पापों के प्रायश्चित और भुगतान के लिए लिया गया था। जानवर के खून ने आध्यात्मिक रूप से न्याय के लिए परमेश्वर की माँग को संतुष्ट किया।

हालाँकि, भले ही पापपूर्ण कार्य के लिए भुगतान किया गया था, आदम और हव्वा की पूरी प्रकृति अब पाप से संक्रमित थी, उन्होंने परमेश्वर की एकमात्र आज्ञा का उल्लंघन किया था: अच्छे और बुरे के ज्ञान के वृक्ष से उस फल को न खाएँ। आदम और हव्वा स्वाभाविक रूप से जानते थे कि उनके पापी स्वभाव को ढकना होगा; उन्होंने इसे वनस्पति जीवन के साथ करने की कोशिश की, लेकिन परमेश्वर ने कहा कि यह पर्याप्त नहीं था। केवल रक्त ही पाप को ढक सकता है। बेशक, आदम और हव्वा सचेत रूप से पाप के बारे में नहीं सोच रहे थे, वे केवल इतना जानते थे कि उन्हें शर्म महसूस होती है और उन्हें लगता है कि यह उनकी शारीरिक नग्नता के कारण हो सकता है। इसलिए उन्होंने इसे ढककर एक भौतिक उपाय खोजा। बेशक रक्त भौतिक है और सभी माँस को अस्तित्व में रहने के लिए रक्त की आवश्यकता होती है, हालाँकि स्वर्गदूतों और करुबों जैसे **आध्यात्मिक** प्राणियों, यहाँ तक कि शैतान और उसके राक्षसों को भी अस्तित्व में रहने के लिए रक्त की आवश्यकता नहीं होती है। फिर भी भौतिक रक्त का आध्यात्मिक प्रभाव होता है और यह आध्यात्मिक प्रभाव ही है जो परमेश्वर के लिए मायने रखता है और इसलिए यह हमारे लिए भी मायने रखता है।

बाइबल में एक शब्द का इस्तेमाल किया गया है, जिसका इस्तेमाल किसी जानवर की जान लेने के लिए किया जाता है, जो उस मौत के बदले में लिया जाता है, जो उस इंसान के लिए उचित है, जिसने ईश्वर के खिलाफ अपराध किया है: बलिदान। मैंने अभी बताया कि बाइबल में रक्त सिद्धांत की शुरुआत में ही स्थापित किया गया था कि रक्त के साथ जीवन, रक्त के बिना जीवन से अलग है (पशु बनाम पौधे का जीवन); और हम पाते हैं कि मानव जाति (ईश्वर को बलिदान करने की आवश्यकता को पहचानते हुए) आमतौर पर इसे ईश्वर के सिद्धांतों के अनुसार करने के बजाय प्रत्येक व्यक्ति की पसंद के अनुसार करना पसंद करती है। इस प्रकार हमारे पास हैबेल और काइन (हाबिल और कैन) का उदाहरण है, जिन्हें ईश्वर के लिए बलिदान लाने के लिए कहा जाता है और हाबिल एक जानवर लाता है और कैन उपज लाता है। बेशक, उपज को अस्वीकार

कर दिया जाता है क्योंकि यह स्पष्ट रूप से एक ऐसी भेंट है जिसमें प्रायश्चित्त शामिल है और इसलिए पौधे का जीवन उस उद्देश्य के लिए स्वीकार्य नहीं है। यह नियम काइन को इतना क्रोधित करता है कि वह हैबेल को मारने का फैसला करता है और इस तरह हमारे पास पहली दर्ज हत्या है। मैं इसे दूसरे अर्थ में रखूँगा; हमारे पास एक इंसान द्वारा दूसरे इंसान की पहली गैरव्यवस्था हत्या है। बाइबल इस हत्या को **खून** लेना भी कहती है।

इसलिए अब हमारे पास खून के बारे में एक और सिद्धांत है जो स्थापित है: किसी इंसान की गैरव्यवस्था, अन्यायपूर्ण हत्या अपराधी पर खून का दोष बनाती है। और खून का दोष इतना गंभीर है कि इसे केवल दोषी पक्ष के खून से ही क्षतिपूर्ति के रूप में संतुष्ट किया जा सकता है। खून का दोष उस व्यक्ति की इतनी चरम अशुद्धता है जिसने अपराध किया है कि यह तुरंत उस व्यक्ति और परमेश्वर दोनों के बीच अलगाव पैदा करता है।

स्पष्ट रूप से कहें तो रक्त से जुड़े अन्य पाप भी हैं जो रक्तदोष का कारण बनते हैं और उनमें से एक है किसी भी तरह का रक्त पीना। हम बाइबल में बाद में पाते हैं कि महान **बाढ़ के** बाद नूह के समय तक भोजन के लिए किसी जानवर की जान लेना जायज़ नहीं था, तब तक भोजन का एकमात्र अधिकृत स्रोत पौधे थे। दूसरे शब्दों में, महान बाढ़ के समय तक किसी व्यक्ति द्वारा जानवर को मारना और उसे खाना रक्त के विरुद्ध अपराध (रक्त से संबंधित परमेश्वर के नियमों के विरुद्ध अपराध) माना जाता था, जिसके कारण रक्तदोष होता था। और इसी से रक्त खाने पर भी प्रतिबंध लगा, जो माँस खाने से अलग है। रक्त खाने का मतलब है या तो सीधे जानवर का खून पीना या गला घोटकर या किसी अन्य तरीके से जानवर को मारना जिससे उसका खून बाहर न निकल सके और फिर उसका माँस खाना। या इसका मतलब भोजन में एक घटक के रूप में रक्त का उपयोग करना हो सकता है।

तो फिर, सरल शब्दों में कहें तो, खून का दोष तब पैदा होता है जब कोई व्यक्ति, खून के बारे में प्रभु के किसी भी नियम का उल्लंघन करता है: खून खाने से लेकर किसी इंसान की अन्यायपूर्ण हत्या तक, किसी अनुष्ठान प्रक्रिया में इसका दुरुपयोग (या इसका उपयोग करने में लापरवाही) तक। हालाँकि कैन और हाबिल की कहानी हमें खून के दोष के एक और नकारात्मक पहलू का एक मजबूत संकेत देती है। खून का दोष न केवल अपराधी को अपवित्र करता है बल्कि यह उस भूमि को भी अपवित्र करता है जिस पर यह हुआ, यह उन लोगों के समुदाय को भी अपवित्र करता है जिनके बीच यह हुआ। हाबिल की हत्या के अनपेक्षित परिणामों में से एक के रूप में उत्पत्ति 4 को सुनें।

“उत्पत्ति 4:10 यहोवा ने कहा, “तू ने क्या किया है? तेरे भाई का खून भूमि से चिल्लाकर मुझे पुकार रहा है। 11 और तू भूमि की ओर से शापित है, जिसने तेरे भाई का खून तेरे हाथ से पीने के लिए अपना मुँह खोला है। 12 जब तू भूमि पर खेती करेगा, तब वह तुझे अपनी शक्ति फिर न देगी; तू पृथ्वी पर भगोड़ा और पथिक रहेगा।”

यहाँ हमारे पास शायद रक्तपात का सबसे प्रसिद्ध बाइबल का मामला है और इसका परिणाम यह है कि भूमि स्वयं प्रभावित होती है। ऐसा नहीं है कि हाबिल के खून ने आवश्यक रूप से मिट्टी को "हुआ" (हालाँकि यह निश्चित रूप से होना चाहिए) और इसलिए हाबिल के खून और मिट्टी के बीच संपर्क के कारण वह मिट्टी अभिश्राप से दूषित हो गई। बल्कि मिट्टी पर अपराध हत्या के कृत्य से इसकी निकटता के कारण हुआ। इसने एक नकारात्मक आध्यात्मिक प्रभाव उत्पन्न किया; रक्तपात अपने साथ भौतिक और आध्यात्मिक दोनों परिणाम लेकर आया। इस हत्या का आध्यात्मिक प्रभाव भूमि को शापित करने का था क्योंकि भूमि ने उस पर किए गए रक्तपात के प्रभाव को सहन किया, जिससे भूमि का भौतिक प्रभाव, खराब हो गया और इस प्रकार फसलें उतनी अच्छी (या उतनी आसानी से) नहीं पैदा हुईं जितनी रक्तपात होने से पहले होती थीं।

मैं इस बात पर जोर नहीं दे सकता कि यह बाइबल में दर्ज कोई प्राचीन अंधविश्वास नहीं है। यदि रक्त के नियम मनुष्यों की उपजाऊ कल्पनाओं के अलावा और कुछ नहीं थे, तो यीशु का बलिदान पूरी तरह से अनावश्यक था। इसलिए कृपया समझें कि भले ही हमें रक्त और रक्तपात के ये सिद्धांत अजीब लगें, लेकिन वे न केवल अभी भी पूरी तरह से प्रभावी हैं, बल्कि वे इस बात का कारण भी हैं कि मुक्ति का इतिहास एक बहुत ही उद्देश्यपूर्ण मार्ग पर आगे बढ़ा है। और मुझे इस बात का गहरा अफसोस है कि मसीहा के चर्च में हम में से जो लोग आपको खून के इस सिद्धांत के बारे में सिखाने के लिए जिम्मेदार हैं, उन्होंने इसके बजाय अधिक विनम्र दृष्टिकोण अपनाने का फैसला किया है, और खून के अपराध के भयानक परिणामों के बारे में सच बोलने की उपेक्षा की है जो हर घंटे हमारे कंधों पर बढ़ते हैं। मैं इसका समाधान करना चाहता हूँ और हम थोरी देर में इस बारे में और बात करेंगे। इस समझ के साथ आइए हम व्यवस्थाविवरण 21 को आगे बढ़ाएँ और पहले 9 पदों का विश्लेषण करें।

यहाँ जिस एकमात्र मामले पर चर्चा की जा रही है, वह किसी व्यक्ति द्वारा हत्या के शिकार की खोज से संबंधित है, लेकिन ऐसा लगता है कि कोई नहीं जानता कि यह कृत्य किसने किया। यह माना जाता है कि चूँकि हत्यारे की पहचान नहीं की गई है, इसलिए उसे व्यवस्था के अनुसार दंडित नहीं किया जा सकता (जो कि उसे मृत्युदंड देना है)। ध्यान दें कि मुद्दा, हत्यारे को खोजने और उसे न्याय के कटघरे में लाने के बारे में नहीं है, बल्कि यह इस बारे में है कि खून के अपराध की बहुत गंभीर समस्या के बारे में क्या किया जाए जो अब भूमि और स्थानीय समुदाय के लोगों पर हावी हो गई है।

ध्यान दें कि इस मामले को आगे "खुले में" शव मिलने के रूप में परिभाषित किया गया है। यह शव किसी खेत में या सड़क के किनारे मिला था। तकनीकी रूप से यह उस स्थिति में क्या करना है, इस पर लागू नहीं होता है, जब कोई व्यक्ति शहर या गाँव के अंदर मृत पाया जाता है। हालाँकि, चूँकि तोरह में ऐसा कुछ भी नहीं है जो विशेष रूप से उस बारीकियों को संबोधित करता हो, इसलिए रब्बियों और संतों ने यह मान लिया है कि इस व्यवस्था के कुछ हिस्से) शहर के अंदर हुई एक अनसुलझी हत्या पर लागू हो सकते हैं।

पद 2 में बुजुर्गों और मजिस्ट्रेटों (वास्तव में इब्रानी शब्द **शोफेट**, न्यायाधीश) की बात की गई है, जिन्हें उस स्थान पर आना है जहाँ पीड़ित पाया गया था और व्यवस्था प्रक्रिया शुरू करनी है। चूँकि यह व्यवस्था उस युग की कल्पना करता है जब इस्राएल कनान की भूमि पर बसा हुआ था, और भूमि को 12 क्षेत्रों (12 गोत्रों में से प्रत्येक के लिए एक) में विभाजित किया गया था, तो ये सरकारी अधिकारी (बुजुर्ग और न्यायाधीश) निश्चित रूप से वे हैं जो अपने क्षेत्र में मामलों की अध्यक्षता करते हैं।

इसलिए यदि अपराध यहूदा के क्षेत्र में हुआ था तो यह यहूदा के गोत्र के सदस्य, बुजुर्ग और न्यायाधीश ही थे जो इस मामले पर निर्णय लेंगे।

उनका पहला काम शव के स्थान से लेकर आस पास के शहरों तक की दूरी को सावधानीपूर्वक मापना और यह निर्धारित करना है कि हत्या के दृश्य के सबसे करीब कौन सा शहर था। बहुत सावधानी बरतनी पड़ती है क्योंकि जो भी शहर सबसे करीब होता है, उसे अपराध के कारण खून का दोषी ठहराया जाता है। अब इसे एक मिनट के लिए समझ लें क्योंकि यह कोई ऐसी प्रक्रिया नहीं है जिसे इब्रानी लोगों ने सोचा हो। यह वह प्रक्रिया है जिसे प्रभु ने बनाया है। ध्यान दें कि यह सिद्धांत कितना वास्तविक और महत्वपूर्ण है कि यहोवा ने पृथ्वी पर अपने व्यवस्थाओं को लागू करने के लिए मानव सरकार बनाई, और वह निर्धारित करने का उनका अधिकार कि खून का दोष कहाँ है, उसकी नज़र में पूरी तरह से वैध है। इन सरकारी अधिकारियों पर भरोसा किया जा रहा है कि वे, परमेश्वर के सांसारिक एजेंटों के रूप में, यह निर्धारित करेंगे कि इस अनसुलझे हत्या के कारण हुए खून के दोष से निपटने के लिए किस समुदाय को ज़िम्मेदार ठहराया जाएगा। जो शहर सबसे नज़दीक था, उसने न केवल अपराध को सहन किया, बल्कि वे अपराध को शुद्ध करने (इसके लिए प्रायश्चित्त करने) के लिए भी ज़िम्मेदार बन गए। अगर उन्होंने ऐसा नहीं किया तो वे हमेशा के लिए परमेश्वर के सामने अपने खून के दोष में बने रहेंगे। इस खूनी अपराध से मुक्ति पाने की अनुष्ठान प्रक्रिया पद 3 में शुरू होती है। और यह है कि अपराध स्थल के सबसे नज़दीकी शहर के बुजुर्गों को एक बछिया प्रदान करनी है जिसका कभी भी खेत में काम करने या सामान्य रूप से किसी भी काम के उद्देश्य से उपयोग नहीं किया गया हो। उन्हें बछिया को पास की एक वादी में लाना है और वहाँ उसकी गर्दन तोड़कर उसे मार देना है।

वादी एक नदी का किनारा है, जो साल के कुछ समय में आमतौर पर सूखा रहता है और अन्य समय में बहता पानी होता है। वादी के बारे में निर्देश थोड़ा अनिश्चित है। आम तौर पर इसका अनुवाद यह होता है कि यह एक ऐसी वादी होनी चाहिए जो "अतिप्रवाहित" हो, या जो "तेज प्रवाह वाली" हो। यह इस्राएल में एक विरोधाभास है क्योंकि ऐसी कुछ ज्ञात वादी हैं जो पूर्वानुमानित समय पर मजबूती से बहती हैं (कम से कम आधुनिक समय में तो यह बहुत दुर्लभ है)। इसलिए तार्किक सवाल यह है कि चूँकि समारोह हत्या के शिकार व्यक्ति के शरीर के पास, निर्दिष्ट गाँव के स्थानीय निकटता में और निश्चित रूप से कबीलाई क्षेत्र की सीमाओं के भीतर किया जाना चाहिए, तो सबसे सामान्य मामले में क्या होगा जहाँ कोई वादी नहीं है जो तेजी से बह रही हो? अधिकांश नए विद्वान इस बात से सहमत हैं कि इब्रानी शब्द **'ईटन** का "अतिप्रवाहित" या "तेज प्रवाह"

के रूप में अनुवाद सही नहीं है। पवित्रशास्त्र के अन्य संदर्भों में यह शब्द "मजबूत" को इंगित करता है जैसे कि "कठोर" के अर्थ में। उदाहरण के लिए, बाइबल में जब राजा (या यहाँ तक कि परमेश्वर) के "मजबूत हाथ" से शासन करने की बात की जाती है, तो 21 वीं सदी के लिए शब्दों का बेहतर अनुवाद "कठोर हाथ" होगा। इसका अर्थ है बिना सहनशीलता के शासन करना, अडिग और अडिग। इसलिए अधिक संभावना है कि यह बछिया को एक विशिष्ट इस्राएली वादी में लाने का संदर्भ दे रहा है, जो अडिग है, जिसका अर्थ है कि यह इतनी ऊबड़-खाबड़ और पथरीली है कि इसमें खेती नहीं की जा सकती और यह कोई उपयोगी पानी प्रदान नहीं करती। जो लोग इस्राएल गए हैं, वे इसे आसानी से कल्पना कर सकते हैं। वहाँ की वादियाँ साल के अधिकांश समय सूखी रहती हैं, और कभी-कभी क्षणिक बाढ़ के रूप में पानी होता है। आपको इन वादियों के किनारे झाड़ियों और बबूल (इब्रानी में, **शित्तिम**) के पेड़ों की एक पंक्ति मिलेगी, लेकिन वे भी चट्टानी हैं और मिट्टी आम तौर पर अकार्बनिक रेत है। यदि आप पौधे लगाने के लिए चट्टानों को हटाने की कोशिश करते हैं, तो अगली बाढ़ बस और अधिक चट्टानें लाएगी। यदि आप कोई फसल लगाते हैं, तो बाढ़ कुछ सेकंड में उसे नष्ट कर देगी। इतना ही नहीं, वादी के नीचे मौजूद पानी आमतौर पर कई फीट नीचे नम मिट्टी के रूप में होता है और शायद ही कभी यह कुएँ के लिए उपयुक्त होता है।

तो शायद यह बछिया को ऐसी जगह लाने के बारे में बात कर रहा है जिसका इस्तेमाल फसल उगाने या पानी प्राप्त करने के लिए नहीं किया जा सकता है और न ही किया जाएगा। यहीं पर शहर के बुजुर्गों को बछिया की गर्दन तोड़नी है। मैं इस प्रक्रिया के बारे में कुछ बातें बताना चाहता हूँ। सबसे पहले, यह काफी क्रूर है। आप आसानी से गाय की गर्दन नहीं तोड़ सकते। यह प्रक्रिया दर्दनाक होगी और इसमें थोड़ा समय लगेगा। दूसरा, अनुष्ठान हत्या की इस विधि का उल्लेख निर्गमन की पुस्तक (अध्याय 13 और 34) में अशुद्ध जानवरों (ऐसे जानवर जो अपनी प्रजाति के कारण बलि के लिए उपयुक्त नहीं हैं या वे खामियों के कारण बलि के उपयोग के लिए अयोग्य हैं) के ज्येष्ठ पुत्र को मारने के साधन के रूप में किया गया है। इस अनुष्ठान में इस्तेमाल की गई बछिया के बारे में ऐसा कुछ भी नहीं है जो यह संकेत दे कि यह अनुष्ठान बलि के लिए उपयुक्त नहीं थी या यह किसी भी तरह से अशुद्ध थी।

फिर इस अनुष्ठान के दौरान हम देखते हैं कि पुजारी आगे आते हैं; उनकी भूमिका क्या है, यह हम नहीं जानते।

ऐसा प्रतीत होता है कि वे वहाँ केवल यह सुनिश्चित करने के लिए मौजूद हैं कि प्रक्रिया सही ढंग से संपन्न हो।

इससे एक बहुत ही महत्वपूर्ण बात सामने आती है: एक अज्ञात हत्या के शिकार की खोज के जवाब में बछिया की हत्या बलिदान नहीं है। यह पहले से ही परमेश्वर द्वारा स्थापित किया गया है कि बलि केवल तम्बू (बाद में मंदिर) में, पवित्र भूमि पर ही दी जा सकती है, और निश्चित रूप से यह विशेष अनुष्ठान प्रक्रिया जिसका हम अध्ययन कर रहे हैं, किसी भी स्थान पर हो सकती है। इसके अलावा पुजारी हत्या नहीं करते,

कोई वेदी नहीं है, और जानवर को आग में नहीं जलाया जाता। इसलिए यह किसी भी तरह से बलिदान नहीं है, बल्कि कुछ और है।

इसके बाद अनुष्ठान का एक और दिलचस्प पहलू है। खून के दोषी ठहराए गए शहर के बुजुर्ग बछिया के शरीर पर अपने हाथ (पानी से) धोते हैं और वे पद 7 और 8 में बताए गए अनुसार घोषणा को दोहराते हैं। कई बाइबल अनुवादकों का कहना है कि बुजुर्गों द्वारा कहे गए ये शब्द ईश्वर के प्रति एक प्रतिज्ञा हैं; मैं इससे सहमत नहीं हूँ। न केवल ईश्वर का नाम नहीं लिया गया है (प्रतिज्ञा में एक अनिवार्य शर्त) बल्कि वाक्य की संरचना वाक्य की शुरुआत में इब्रानी कृदंत 'इम' का उपयोग नहीं करती है, जो इसे एक प्रतिज्ञा बनाती है। दूसरे शब्दों में, 'इम' शामिल होने पर अनुवाद "मैं शपथ लेता हूँ" बन जाता है, लेकिन 'इम' के बिना यह केवल "मैं घोषणा करता हूँ" हो जाता है। व्यवस्थाविवरण 21 में इस पद में 'इम' नहीं है और इसलिए हमारे पास यह निष्कर्ष निकालने का कोई कारण नहीं है कि बुजुर्गों ने जो कहा वह एक प्रतिज्ञा या शपथ थी।

हाथ धोना संभवतः इस पूरे मामले में बुजुर्गों की बेगुनाही का एक प्रतीकात्मक संकेत है और वे सच बोल रहे हैं। वे कह रहे हैं कि उन्हें खून का दोष नहीं उठाना चाहिए क्योंकि वे हत्या में शामिल नहीं थे, हत्यारे की पहचान नहीं जानते थे, और वे उचित रूप से इसका अनुमान नहीं लगा सकते थे या इसे रोक नहीं सकते थे। प्राचीन मध्य पूर्व में हाथ धोने का यह अर्थ इतना आम था कि लगभग निश्चित रूप से इसका यही अर्थ था। याद करें कि बहुत समय बाद भी हाथ धोने के उस इशारे का अर्थ अभी भी अस्तित्व में था, जैसा कि हम मत्ती के सुसमाचार में पढ़ते हैं कि पोंटियस पिलातूस ने यीशु को मौत की सजा सुनाने के लिए बुलाई गई कंगारू अदालत में ऐसा ही कुछ किया था, जब (हाथ धोते समय) उसने भीड़ से कहा, "मैं इस आदमी के खून से निर्दोष हूँ। आज भी दुनिया भर में लगभग हर जगह यह कहावत आम है कि हम "इस मामले से अपने हाथ धो लेते हैं" जो हमारी बेगुनाही को दर्शाता है।

अब शहर के बुजुर्गों की बेगुनाही की घोषणा पर वापस आते हैं। शपथ के बजाय उनका कथन किसी और चीज से बढ़कर ईश्वर से प्रार्थना है। ईश्वर से की गई घोषणा जो शपथ नहीं है, परिभाषा के अनुसार प्रार्थना है। इस प्रार्थना में बुजुर्ग सीधे परमेश्वर से निर्दोष व्यक्ति (हत्या के शिकार) की मृत्यु के कारण हुए रक्तपात के अपराध से उन्हें मुक्त करने के लिए कह रहे हैं। देखिए बात यह है: चूँकि यह अनुष्ठान प्रक्रिया बलिदान नहीं है, इसलिए इसमें कोई प्रायश्चित गुण नहीं हो सकता है। इसका उद्देश्य केवल लोगों के लिए उदाहरण और प्रदर्शन हो सकता है, लेकिन परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करना भी हो सकता है। वास्तविकता यह है कि यह प्रार्थना ही इस स्थिति में क्षमा की कुँजी थी, और बुजुर्ग मुक्ति के लिए अपनी मुक्ति की स्थिति पर निर्भर करते हैं। यह वस्तुतः उसी ढाँचे में है जिस ढाँचे में हर आस्तिक ईश्वर से क्षमा माँगता है। हम छुटकारे का कर चुके हैं और हमारी मुक्ति की स्थिति हमें अपने पिता से क्षमा और दया माँगने का अधिकार देती है (मुक्ति न पाने वालों के पास ऐसी कोई चीज उपलब्ध नहीं है)।

पद 8 के अंतिम शब्दों पर ध्यान दें: "और वे खून के दोष से मुक्त (माफ) किये जायेंगे"।

मुझे माफ करें कि मैं एक बात दोहरा रहा हूँ जिस पर मैंने कई बार जोर देने की कोशिश की है, लेकिन हमेशा कुछ लोग इसे समझ नहीं पाते: तोरह में बार-बार जब प्रभु इन प्रायश्चित अनुष्ठान प्रक्रियाओं को बताते हैं तो मार्ग प्रभु के इस कथन के साथ समाप्त होता है, "और उन्हें क्षमा कर दिया जाएगा"। दोस्तों इसका मतलब बिल्कुल वही है जो यह कहता है, ये अनुष्ठान बलिदान (और आज हमारे मामले में एक अनुष्ठान प्रक्रिया के भीतर बोली गई प्रार्थना जो बलिदान नहीं है) वास्तविक, असली, पूर्ण, स्पष्ट क्षमा लाती है। आंशिक क्षमा नहीं, किसी तरह की क्षमा नहीं। मैंने कई बार प्रचारकों को यह कहते सुना है कि पुराने नियम में पाप "ढँके" गए थे, लेकिन वास्तव में उन्हें क्षमा नहीं किया गया था।

असली माफी सिर्फ नए नियम में ही मिलती है। यह पूरी तरह से गलत है। "ढँके हुए" पाप बनाम "मुक्त" या "माफ किए गए पाप के बारे में यह मुद्दा एक भ्रामक बात है। बाइबल, पुराने या नए नियम में ऐसा कोई विचार नहीं है कि पाप ढँका हुआ है लेकिन माफ नहीं किया गया है। यह कहना कि पाप ढँका हुआ है, सिर्फ बोलचाल की भाषा है और यह सिर्फ अनुवादक द्वारा चुना गया शब्द है। ढँका हुआ, मुक्त और माफ किया गया का मतलब एक ही है और यह एक ही इब्रानी शब्द (**किपर या काफर**) का अनुवाद करता है और एक ही वजन रखता है और एक ही प्रभाव डालता है। वे पुराने नियम के इब्रानी जो बलिदान प्रणाली का पालन करते थे, वास्तव में उनके अपराधों के लिए माफ कर दिए गए थे, पूरी तरह से। अगर कोई पुराने नियम में "ढँके हुए" शब्द के साथ बने रहने के लिए दृढ़ है (और इसमें कुछ भी गलत नहीं है) तो नए नियम में इसका अर्थ अचानक बदलकर "मुक्त, प्रायश्चित या माफ किया गया" करने का कोई आधार नहीं है। यह बदलाव मनुष्यों के एजेंडा संचालित सिद्धांत को साबित करने या छिपाने की कोशिश करने के लिए किया जाता है।

तो मसीहा के बलिदान ने ऐसा क्या किया जो जानवरों की बलि से अलग था? कम से कम उनका बलिदान उन चीजों के लिए प्रायश्चित करने में सक्षम था जो बलिदान प्रणाली नहीं कर सकती थी। उनका बलिदान एक हत्यारे के लिए प्रायश्चित कर सकता था। उनका बलिदान एक मूर्तिपूजक के लिए प्रायश्चित कर सकता था। बलिदान प्रणाली के भीतर हत्यारे या मूर्तिपूजक के लिए प्रायश्चित करने की कोई अनुष्ठान प्रक्रिया जैसी कोई चीज मौजूद नहीं है, ऐसे व्यक्ति को बस हमेशा के लिए "करेट" (काट दिया गया) कर दिया जाता था। उसे शारीरिक रूप से मार दिया गया और आध्यात्मिक रूप से परमेश्वर से अलग कर दिया गया। हालाँकि अगर कोई सच में कबूल करता है और पश्चाताप करता है और यीशु पर भरोसा करता है, तो हत्या के लिए भी आपके अपराध का प्रायश्चित हो जाता है। ऐसा कहने का मतलब है कि आप खून के अपराध के प्रायश्चित के लिए अपने भौतिक जीवन को लेने से मुक्त नहीं हैं, न ही आप सांसारिक न्याय से बच सकते हैं, केवल आपका आध्यात्मिक जीवन जारी रहने का आश्वासन दिया गया है।

इसके अलावा लेवी के बलिदान की व्यवस्था ने ऐसा कोई रास्ता नहीं बनाया जिसके द्वारा मनुष्य अपने बुरे स्वभाव को बदलकर नया पवित्र स्वभाव प्राप्त कर सके। इसका प्रभाव यह है कि कोई भी मनुष्य कभी स्वर्ग नहीं जा सकता। इसके बजाय पुराने नियम के समय में यदि वह तोरह के नियमों के अनुसार धार्मिक अवस्था

में मरता था, तो उसकी आत्मा या आत्मा उस स्थान पर चली जाती थी जिसे बाइबल अब्राहम की गोद कहती है।

अब्राहम की गोद, स्वर्ग नहीं थी, क्योंकि कोई भी व्यक्ति जिसने अपने स्वभाव को नए पवित्र स्वभाव से नहीं बदला है, वह स्वर्ग में प्रवेश करने के लिए पर्याप्त रूप से शुद्ध नहीं हो सकता। यह सच है कि 'ओलाह और मिनचाह बलिदान ने मनुष्य के पापी स्वभाव से इस हद तक निपटा कि बलिदान ने मनुष्य को परमेश्वर के साथ संवाद करने और उसके साथ शांति में रहने की अनुमति दी। लेकिन ये वास्तव में मनुष्य के अशुद्ध स्वभाव को शुद्ध नहीं करते थे। मसीह के बलिदान ने मनुष्य की स्वाभाविक पापी आत्मा (उसकी प्रकृति) को पवित्र आत्मा (एक नई और पवित्र प्रकृति) के लिए बदलने का मार्ग प्रशस्त किया। इस नए पवित्र स्वभाव के साथ हम परमेश्वर के सामने उसके स्वर्ग में खड़े हो सकते हैं।

और बेशक लेवी के बलिदान प्रणाली के तहत बलिदान के बाद बलिदान होना जरूरी था। हर नए दिन के लिए इस्राएल राष्ट्र के लिए नए बलिदान की जरूरत थी, और पाप की हर नई घटना के लिए एक अतिरिक्त पत्थर मारने की रस्म की आवश्यकता होती है। हालाँकि, यीशु द्वारा किया गया केवल एक ही बलिदान था (स्वयं का) जिसने बलिदान प्रणाली के भीतर विभिन्न बलिदानों की भीड़ को संतुष्ट किया। साथ ही उनके बलिदान ने इस तरह से कार्य किया कि यदि आप फिर से पाप करते हैं तो अतिरिक्त बलिदान की आवश्यकता नहीं है।

अंत में, उनका बलिदान (आम तौर पर) जानबूझकर किए गए, अत्याचारी पापों के लिए प्रायश्चित्त कर सकता था, जबकि बलिदान प्रणाली में ऐसा कोई प्रावधान नहीं था। मैं उन लोगों को याद दिलाता हूँ जिन्होंने मुझसे पहले यह सुना है कि अनजाने में किए गए पापों के संबंध में "अनजाने में" शब्द अपने सभी पहलुओं में ठीक वैसा ही नहीं है जैसा कि हम (आधुनिक शब्दावली में) अनजाने में किए गए शब्द के बारे में सोचते हैं। यह समान है लेकिन इसमें सूक्ष्म लेकिन महत्वपूर्ण अंतर हैं।

यीशु के बलिदान और बैलों और भेड़ों के बलिदान के बीच यही मुख्य अंतर थे। लेकिन दोनों मामलों में परमेश्वर द्वारा क्षमा की पूर्णता एक जैसी थी।

अब वापस खून के दोष के दूसरे पहलुओं पर आते हैं। मुझे उम्मीद है कि आपको खून का मतलब क्या है और खून का दोष क्या है और यह कितना गंभीर है, इसकी बेहतर समझ मिलनी शुरू हो गई होगी। जब मैं संस्कार का संचालन करता हूँ, तो आप में से जो लोग मौजूद रहे हैं, वे जानते होंगे कि मैं हमेशा एक खास पद पढ़ता हूँ जिसे संत पौलुस ने 1 कुरिन्थियों में कहा था, और यह पद ठीक उसी बात से संबंधित है जिस पर हम चर्चा कर रहे हैं: खून का दोष।

1 कुरिन्थियों 11:27 इसलिये जो कोई प्रभु की रोटी खाए, या उसका कटोरा पिए, वह प्रभु की देह और लहू को अपवित्र करने का दोषी ठहरेगा। 28 मनुष्य अपने आप को जाँचे? और इसी रीति से रोटी खाए और कटोरे में से पीए।

ध्यान दें कि यदि कोई व्यक्ति उस भोज में भाग लेता है जिसे हम "सामुदायिक भोज" कहते हैं, लेकिन वह ऐसा करने के योग्य नहीं है, तो वह मसीह के रक्त का दोषी होगा। इस संदर्भ में अयोग्य का क्या अर्थ है, इसकी मेरी सर्वोत्तम समझ के अनुसार, मुझे लगता है कि इसका अर्थ है क) अविश्वासी होना, और/या ख) वह व्यक्ति जो आस्तिक होने का दावा करता है, लेकिन परमेश्वर के साथ एकता से इतना दूर हो गया है कि मसीह का बलिदान उसके लिए प्रभावकारी नहीं है।

सभी धर्मग्रंथों में केवल एक अपवाद है जो प्रतीकात्मक रूप से रक्त पीने (या उस मामले में, मानव माँस का प्रतीकात्मक रूप से खाने) की अनुमति देता है, और वह है भोज। यीशु के फसह के समय शराब पीने को उनके रक्त के प्रतीक के रूप में जोड़ने का बाइबल में कोई समानांतर नहीं है। शराब हमेशा खुशी से जुड़ी रही है, कभी भी रक्त से नहीं। एक इब्रानी के लिए वास्तविक या प्रतीकात्मक रक्त पीना इतना भयानक और घृणित था कि मुझे नहीं लगता कि मेरे पास इसे व्यक्त करने के लिए शब्द हैं। और रक्त पीने पर यह घृणा यहोवा द्वारा आदेशित और विकसित की गई थी, और यह रक्त के बारे में उनके कई नियमों में समझाया गया है (जिनमें से कई पर हमने आज चर्चा की है)। रक्त खाने से संबंधित इस स्थिति की गंभीरता औसत ईसाई से बच जाती है। यहून्ना के सुसमाचार में एक दिलचस्प कहानी है जो अब आपको अधिक समझ में आ सकती है।

अपनी बाइबल में यूहन्ना 6:49-69 खोलिए

यूहन्ना 6:49-69 पढ़ें

पद 61 में, यीशु द्वारा अपने माँस खाने और अपने खून पीने की परम आवश्यकता की घोषणा करने के बाद, वह एक आलंकारिक प्रश्न पूछता है, क्योंकि वह देखता है कि उसके कई अनुयायी उससे दूर जा रहे हैं (मैं यह भी जोड़ सकता हूँ कि वे घृणा में हैं)। उसका प्रश्न है: "क्या यह तुम्हें अपमानित करता है?" वह किस "इस" का उल्लेख कर रहा है? बेशक यह उसका खून खाने का संदेश था जिसने उन लोगों के बीच भी पूर्ण घृणा पैदा की जिन्होंने खुद को उसके लिए समर्पित कर दिया था। और फिर वह कहता है कि ये शब्द "आत्मा में" हैं, जो हम सभी स्वाभाविक रूप से जानते हैं, जो यह दर्शाता है कि वह किसी भी तरह से शाब्दिक, शारीरिक माँस खाने और खून पीने की बात नहीं कर रहा था; यह उसके साथ पूर्ण एकता में आने के आध्यात्मिक निर्णय का प्रतीक था।

मसीह के मरने के बहुत समय बाद, संत पौलुस ने 1 कुरिन्थियों में चेतावनी दी कि जो लोग अयोग्य हैं उन्हें यीशु का खून नहीं पीना चाहिए (प्रार्थना स्वीकार नहीं करनी चाहिए) अन्यथा उस व्यक्ति को खून का

दोषी ठहराया जाएगा। और खून के दोषी होने की सजा क्या है? अगर अपराधी का पता चल जाए, तो उसकी जान ले ली जानी चाहिए। परमेश्वर की न्याय व्यवस्था में खून का एक मुख्य नियम यह है कि जब निर्दोष खून बहाया जाता है, तो परमेश्वर को दोषी का खून चुकाना होता है, कोई अपवाद नहीं और कोई प्रतिस्थापन नहीं। और दोषी का यह अपेक्षित खून प्रायश्चित्त का खून नहीं है; यह प्रतिशोध का खून है। यह परमेश्वर के प्रति ऋण का खून है।

मैं इस पाठ को रक्तदोष के कुछ अतिरिक्त सिद्धांतों की ओर इशारा करके समाप्त करना चाहता हूँ। और मेरे द्वारा इसे इंगित करने का कारण हम सभी के लिए एक चुनौती है। हम एक ऐसे देश में रहते हैं जो रक्तदोष से इतना दूषित है कि हमारा राष्ट्रीय भविष्य पूरी तरह से पूर्वानुमानित है: बाकी दुनिया के साथ-साथ विनाश। हम, एक कथित ईसाई राष्ट्र, रक्तदोष के पात्र कैसे हो सकते हैं और हमारा रक्तदोष कहाँ है? हत्यारों की जान लेने से इनकार करने और इसके बजाय यह कहने में कि उन्हें अपेक्षाकृत सामान्य जीवन अवधि के अंत में मरने तक बस जेल में रखना बेहतर है।

चर्च का अधिकांश भाग (और यहूदी धर्म का अधिकांश भाग) इसे मानवीय दया कहता है। हाल ही में हमारे पास एक गैर-पश्चाताप करने वाले मुस्लिम आतंकवादी का भयानक मामला आया, जिसने स्कॉटलैंड के लॉकरबी में विस्फोट करने वाले हवाई जहाज पर बमबारी की योजना बनाई और उसे अंजाम दिया, जिसमें लगभग 300 लोग मारे गए, उसे "मानवीय कारणों" पर जेल से रिहा कर दिया गया। न केवल इस नरसंहार के लिए उसकी जान नहीं ली गई, बल्कि उसे केवल इसलिए रिहा कर दिया गया क्योंकि वह बीमार था (दया और क्षमा के कुछ भयावह और धर्मनिरपेक्ष मानवतावादी दर्शन के आधार पर)। लेकिन परमेश्वर कहते हैं कि ऐसा करना उनकी आज्ञाओं का पालन करने से इनकार करना है। हत्या से देश और समुदाय पर खून का दोष लगता है, न कि केवल अपराधी पर। उस खून के दोष से मुक्ति पाने का एकमात्र तरीका हत्यारे की जान लेना है। यही परमेश्वर का नियम है। हमारे अपने देश ने कई राज्यों में दशकों से ऐसा करने से इनकार कर दिया है। यहाँ तक कि जिन राज्यों में मृत्युदंड है, उन्होंने भी एक पूर्व नियोजित हत्यारे की जान बख्शाने के लिए असंख्य कारण खोजे हैं। हम सभी आज खून के दोष से लथपथ देश में रहते हैं, और परमेश्वर कार्य करेंगे।

पुनः, रक्त-दोष से निपटने के लिए केवल एक ही निर्धारित तरीका है, अपराधी को मृत्युदंड दो, अन्यथा पूरा समुदाय उसके साथ अपराध का बोझ उठाएगा।

एक सवाल जो किसी भी ईसाई को जो कुछ सालों से बचा हुआ है, उसे अब तक खुद से पूछना चाहिए: 'हमारे उद्धारकर्ता के नेतृत्व में आने वाला आर्मागेडन का युद्ध इतना खूनी और बिना दया वाला क्यों है?' आप देखिए आर्मागेडन एक पवित्र युद्ध है जिसमें पूरी तरह से विनाश होता है। कई मायनों में यह नूह की बाढ़ के समान है, जहाँ केवल वे लोग ही बच पाए थे जो उस जहाज पर सवार थे। पूरी दुनिया में आर्मागेडन के युद्ध में केवल वे ही लोग बचेंगे जिन्होंने युद्ध शुरू होने से पहले यीशु को स्वीकार किया था।

जो लोग युद्ध के दौरान धर्म परिवर्तन करने की कोशिश करते हैं, उन्हें भी वही सज़ा मिलती है जो उन लोगों को मिलती है जो ऐसा नहीं करते: विनाश।

आर्मागेडन की लड़ाई में मसीह को रक्त का बदला लेने वाला कहा जाता है। क्या अब आप समझ गए हैं कि इस शब्द का क्या मतलब है? प्रभु ने पूरी दुनिया को रक्तपात का दोषी घोषित किया है। हम इस कमरे में रक्त-दोषी हैं क्योंकि (अन्य बातों के अलावा) हम एक ऐसे राष्ट्र का हिस्सा हैं जो न केवल गर्भपात करने वाले डॉक्टरों पर मुकदमा नहीं चलाता है, बल्कि वास्तव में इसे व्यवस्था बनाता है और इसे अच्छा घोषित करता है।

हम इस कमरे में खून के दोषी हैं क्योंकि हमारे देश में ऐसे दोषी हत्यारे हैं जिनकी जान हमारे खून के अपराध से मुक्त होने के लिए नहीं ली जा रही है, बल्कि वे केवल लंबी जेल की सजा काट रहे हैं, इसलिए चूँकि हम खून के अपराध को दूर करने के लिए जो करना जरूरी है, वह नहीं करेंगे, इसलिए प्रभु अपने खून के बदला लेने वाले, यीशु हामाशियाच को भेज रहे हैं, ताकि वह वही करें जो हमेशा से व्यवस्था करता आया है: निर्दोषों का खून बहाने के लिए दोषियों का खून बहाना जरूरी है। और एक समुदाय या समाज जो खून के दोषियों पर ईश्वर के न्याय को लागू करने से इनकार करता है, वह सदस्यता के कारण दोषी है।

मैं यह बताना चाहता हूँ कि यह न तो सतर्कता के लिए आह्वान है और न ही बहाना। हमारे पास एक न्याय प्रणाली है, और हमें इसे बदलने के लिए कड़ी मेहनत करने की आवश्यकता है। लेकिन यह उन मुख्य कारणों में से एक को भी इंगित करता है, जिनकी हमें परमेश्वर के वचन का गहन अध्ययन करने की आवश्यकता है, और साथ ही यीशु मसीह ने हमारे लिए जो कुछ किया है, उसे स्वीकार करने में भी तत्परता दिखानी चाहिए। हममें से जिन्हें अपने खून के अपराध की कीमत चुकानी चाहिए थी, उन्हें मसीहा ने इसकी कीमत चुकाई। लेकिन यह केवल उन लोगों पर लागू होता है जो वास्तव में उस पर भरोसा करते हैं कि वह कौन है और उसने क्या किया है।

अगले सप्ताह हम व्यवस्थाविवरण 21 को जारी रखेंगे, जो परिवारों और पवित्र युद्ध में मानव लूट से संबंधित है।